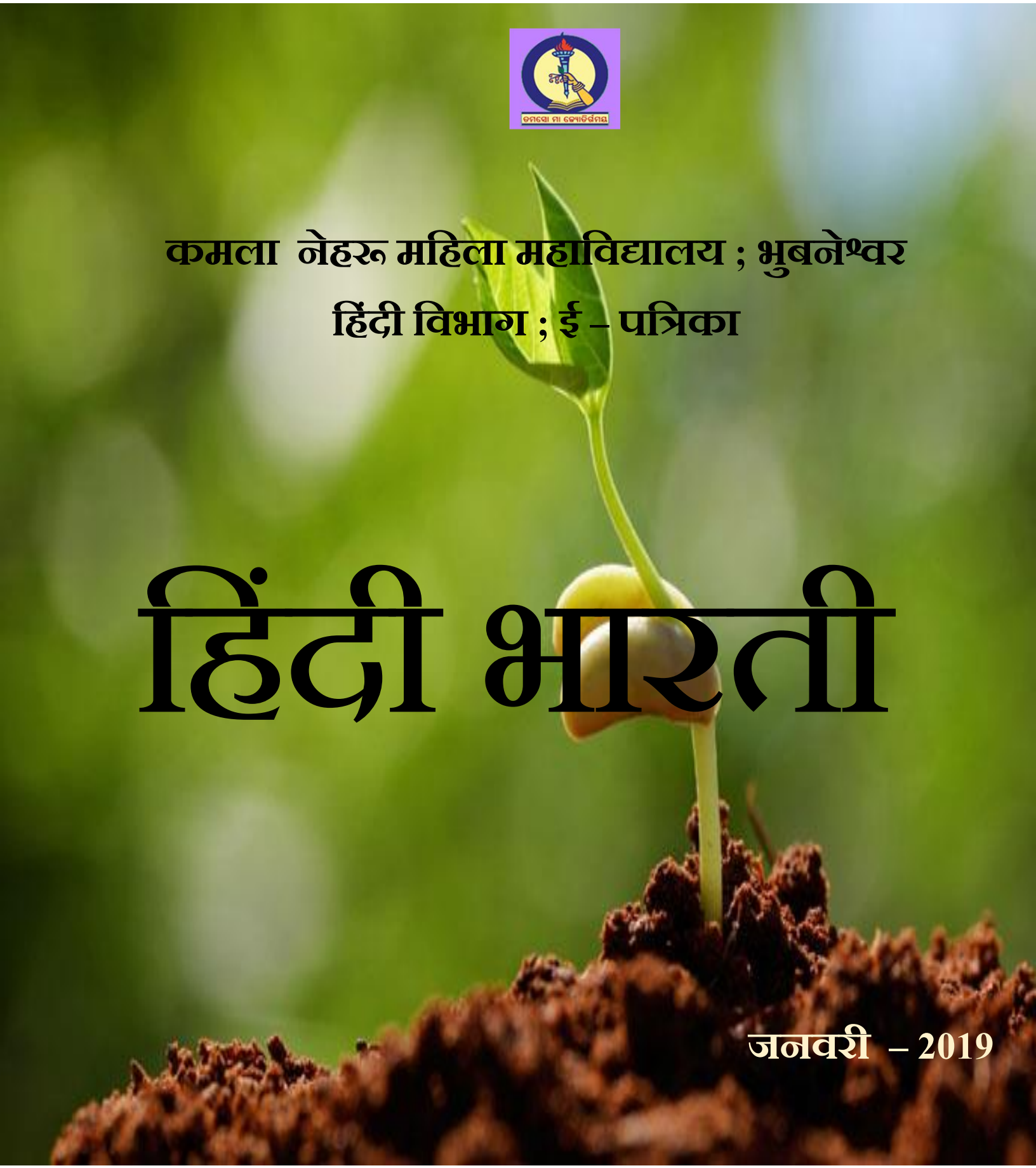

कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

हिंदी भारती

जनवरी – 2019

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी
डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. सोनाली राउत
कु. सस्मिता महंती
कु. श्राबणी महंती

संपादकीय

"हिंदी भारती" का जनवरी अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

"कृष्णा सोबती जी को श्रद्धांजली"

"हिंदी भारती" का यह अंक नवीन प्रारंभ के नाम। जनवरी का यह अंक विविधता को समर्पित है। हमारी ई - पत्रिका ने हमेशा प्रयास किया है कि छात्राओं को प्रोत्साहित करती रहे और उनमें छुपी सृजनात्मकता को तथा नेतृत्व तथा प्रबंधन को अवसर प्रधान करती रहे। "आपकी बात" हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है। कृपया अपनी बात हम तक पहुँचाते रहें। पत्रिका के प्रकाशन में विलंब हेतु हम क्षमाप्रार्थी हैं।

हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका को आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ.सं .
.1	वीर सुरेंद्र साय	लेख	सौदामिनी पाढ़ी	5
.2	सुभाष चंद्र बोस	लेख	बर्षा प्रियदर्षिणी	6
.3	श्रद्धांजली	लेख	संग्रहित	8
.4	मेरी माँ कहाँ	कहानी	कृष्णा सोबती	10
.5	धनुयात्रा	लेख	मोनालीसा मोहंती	14
.6	यशपाल	लेखक परिचय	संग्रहित	15
.7	उत्कृष्ठ काव्य	लेख	लिज़ा मिश्रा	21
.8	बालीयात्रा	लेख	शाकंबरी दास	22
.9	नारी	कविता	शरीफा शरवारी	24
.15	आपकी बात	संदेश		25
.14	कृष्णा सोबती-उपन्यास लेखिका	यू ट्यूब लिंक		27
.15	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ	यादों के गलियारों से	28

वीर सुरेन्द्र साय

जन्म -23 जानवरी 1809

मृत्यु -28 फरवरी 1884

स्थान - शेवाड़ा (ओडिशा जिला -सम्बलपुर)

पिता -धर्म सिंह (छत्रिय राजवंश)

वीर सुरेन्द्र साय भारत के अग्रणी स्वाधीनता संग्रामी में से एक थे। 1847 के विद्रोह के 30 वर्ष पूर्व ही उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन आरंभ किया था। उनका संपूर्ण जीवनकाल 75 वर्ष का था जिसमे 36 वर्ष उन्होंने कारागार में बिताये थे।

वीर सुरेंद्र साय का जन्म (सम्बलपुर,ओडिशा) के राजवंश में 23 जनवरी, 1809 को हुआ था। उनका गाँव सम्बलपुर से 30 कि. मी की दूरी पर था। उनका विवाह हटीबाडी के जमींदार के पुत्री से हुआ था और उनका एक पुत्र और एक पुत्री थी।

भारत में जब ब्रिटिश साम्राज्य के लोगों ने आकर अपनी सत्ता स्थापित की, तब से ही उनका विरोध हर प्रान्त में होने लगा था। 1857 में यह संगठित रूप से प्रकट हुआ; पर इससे पूर्व अनेक ऐसे युद्ध हुए जिन्होंने अंग्रेज़ों के नाक में दम कर रखा था। वीर सुरेंद्र साय ऐसी ही एक वीर थे। और उनकी गतिविधि सम्बलपुर से बिलासपुर तथा कालाहांडी तक फैली हुई थी।

13 जनवरी 1862 में सुरेंद्र साय को उनके घर से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें रायपुर जेल से नागपुर जेल और फिर उसीरगढ किले में भेजा गया।

28 फरवरी 1884 ई को उसिरगढ़ में सुरेंद्र साय की स्वाभाविक मौत हो गई। अंतिम समय में वे अंधे हो गए थे।

वीर सुरेंद्र साय को 1857 ई के विद्रोह का अंतिम शहीद कहा जाता है।

- सौदामिनी पाढ़ी, +3 प्रथम वर्ष

सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस देश के ऐसे महानायकों में से एक हैं जिन्होंने आजादी की लड़ाई के लिए अपना सर्वस्व त्याग देते थे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया था। जो विशेषतः "आजाद हिंदी फौज" के नाम से प्रसिद्ध था।

"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" यह सुभाष चंद्र बोस का ये प्रसिद्ध नारा था। सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। जिनकी निडर देशभक्ति ने उन्हें देश का हीरो बनाया। उन्होंने भारतीय सैनिक कार्यालय की स्थापना बर्लिन में 1942 के प्रारंभ में की, जिसका 1990 में भी उपयोग किया गया था।

यह महान देश प्रेमी का जन्म 23 जनवरी, 1897 को ओडिशा के कटक शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकी नाथ बोष और माता का नाम प्रभाबति था। जानकी नाथ बोष कटक के मशहूर वकील थे।उनके पिता की इच्छा थी कि सुभाष आईसीएस बने उन्होंने अपने पिता की यह इच्छा पूरी की 1920 को आईसीएस परीक्षा में उन्होंने चौथा स्थान पाया मगर सुभाष का मन अंग्रेजो के अधीन काम करने का नही था। 22 अप्रेल 1921 को उन्होंने इस पद से त्यागपत्र दे दिया।

18 अगस्त 1445 को वे हवाई जहाज से मपुरिया जा रहे थे। इस सफर के दोरान ताइहोकू हवाई अड्डा पर विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया। जिसमें उनकी मौत हो गई। उनकी मौत भारत के इतिहास का सबसे बड़ा रहस्य बानी हुई है।

1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्बचित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया यह नीति गाँधीबादी आर्थिक बिचारो के अनुकूल नही थी। 1939 में बोष पुन एक गांधीवादी प्रतिद्वंदी को हराकर विजयी हुए।

सुभाष चंद्र बोस की सत्य कहानियाँ :

बंगाल में महामारी फैल गई थी जिससे कई घर तबाह हो गए थे। कई लोग मर गए थे। पूरा जीवन अस्त व्यस्त हो गया था। उस वक्त नेताजी सुभाष चंद्र बोस अपना ग्रेजुएशन कर रहे थे। उस वक्त लोग की जरूरत थी। जो उन मरीजों की सेवा करे। नेताजी ने भी उन मरीजों की सेवा करे। नेताजी ने भी स्वयंसेवकों के साथ मिलकर गांव में सेवा का काम किया। इस काम में नेताजी पूरे वक्त लगे रहते कई-कई दिन तक सोते भी नहीं थे।

एक दिन सुभाषचंद्र बोस घर रात सोने आये, पिता ने अपने बेटे के सर पर हाथ फेरते हुए कहा कि बेटा कभी कभी आराम भी कर लिया करो। इसके जबाब में नेताजी ने कहा पिताजी! आराम करने के लिए जीवन पड़ा है, अभी गांव के लोगों को मेरी जरूरत है। इस पर पिता ने कहा - बेटा में तुमसे सहमत हूं पर मैनें माँ दुर्गा की पूजा रखी है, जिसमें तुम्हारा आना जरूरी है। इस बात पर नेताजी ने अपने पिता से क्षमा मांगते हुए कहा- पिताजी पूजा और हवन आप कीजिए। मैं दिन दुःखियों की सेवा करूँगा और मुझे माँ दुर्गा का आशिर्वाद मिल जाएगा क्योंकि मानवसेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। बेटे के इस कथन में पिता का सीना गर्व से भर दिया और उन्होंने सुभाषचंद्र जी को अपने गले से लगाकर कहा - बेटा ! तुम सच्चा कर्म कर रहे हो और तुम्हें इसका पुण्य मिलेगा।

- बर्षा प्रियदर्शिनी, +3 प्रथम वर्ष

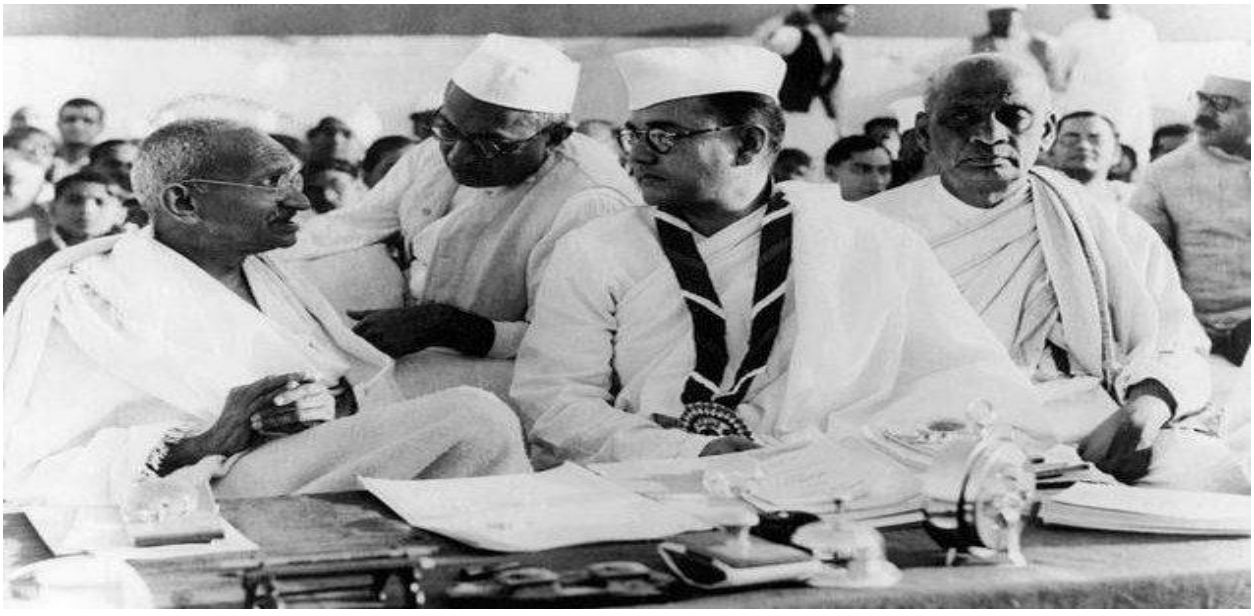

श्रद्धांजली

कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती का जन्म गुजरात में 18 फरवरी 1925 को हुआ था। भारत के विभाजन के बाद गुजरात का वह हिस्सा पाकिस्तान में चला गया है। विभाजन के बाद वे दिल्ली में आकर बस गयीं और तब से यहीं रहकर साहित्य-सेवा कर रही हैं। उन्हें 1980 में 'ज़िन्दगीनामा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। 1996 में उन्हें साहित्य अकादमी का फेलो बनाया गया जो अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है। 2017 में इन्हें भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान "ज्ञानपीठ पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है। ये मुख्यतः कहानी लेखिका हैं। इनकी कहानियाँ 'बादलों के घेरे' नामक संग्रह में संकलित हैं। इन कहानियों के अतिरिक्त इन्होंने आख्यायिका (फिक्शन) की एक विशिष्ट शैली के रूप में विशेष प्रकार की लंबी कहानियों का सृजन किया है जो औपन्यासिक प्रभाव उत्पन्न करती हैं। ऐ लड़की, डार से बिछुड़ी, यारों के यार, तिन पहाड़ जैसी कथाकृतियाँ अपने इस विशिष्ट आकार प्रकार के कारण उपन्यास के रूप में प्रकाशित भी हैं। इनका निधन 25 जनवरी 2019 को एक लम्बी बिमारी के बाद सुबह साढ़े आठ बजे एक निजी अस्पपताल में हो गया।

प्रकाशित कृतियाँ

कहानी संग्रह-

- बादलों के घेरे - 1980

लम्बी कहानी (आख्यायिका/उपन्यासिका)-

1. डार से बिछुड़ी -1958
2. मित्रो मरजानी -1967
3. यारों के यार -1968
4. तिन पहाड़ -1968
5. ऐ लड़की -1991
6. जैनी मेहरबान सिंह -2007 (चल-चित्रीय पटकथा; 'मित्रो मरजानी' की रचना के बाद ही रचित, परन्तु चार दशक बाद 2007 में प्रकाशित)

उपन्यास-

1. सूरजमुखी अँधेरे के -1972
2. ज़िन्दगीनामा -1979
3. दिलोदानिश -1993
4. समय सरगम -2000
5. गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान -2017 (निजी जीवन को स्पर्श करती औपन्यासिक रचना)

विचार-संवाद-संस्मरण-

1. हम हशमत (तीन भागों में)
2. सोबती एक सोहबत
3. शब्दों के आलोक में
4. सोबती वैद संवाद
5. मुक्तिबोध : एक व्यक्तित्व सही की तलाश में -2017
6. लेखक का जनतंत्र -2018
7. मार्फ़त दिल्ली -2018

यात्रा-आख्यान-

- बुद्ध का कमण्डल : लद्दाख़

सम्मान एवं पुरस्कार

साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता समेत कई राष्ट्रीय पुरस्कारों और अलंकरणों से शोभित कृष्णा सोबती ने पाठक को निज के प्रति सचेत और समाज के प्रति चैतन्य किया है।
आपको हिंदी अकादमी, दिल्ली की ओर से वर्ष २०००-२००१ के शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया था। उन्हें वर्ष २०१७ का ५३वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा हुई है।

मेरी माँ कहाँ

- कृष्णा सोबती

दिन के बाद उसने चाँद-सितारे देखे हैं। अब तक वह कहाँ था? नीचे, नीचे, शायद बहुत नीचे...जहाँ की खाई इनसान के खून से भर गई थी। जहाँ उसके हाथ की सफाई बेशुमार गोलियों की बौछार कर रही थी। लेकिन, लेकिन वह नीचे न था। वह तो अपने नए वतन की आज़ादी के लिए लड़ रहा था। वतन के आगे कोई सवाल नहीं, अपना कोई खयाल नहीं! तो चार दिन से वह कहाँ था? कहाँ नहीं था वह? गुजराँवाला, वजीराबाद, लाहौर! वह और मीलों चीरती हुई ट्रक। कितना घूमा है वह? यह सब किसके लिए? वतन के लिए, क़ौम के लिए और...? और अपने लिए! नहीं, उसे अपने से इतनी मुहब्बत नहीं! क्या लंबी सड़क पर खड़े-खड़े यूनस खाँ दूर-दूर गाँव में आग की लपटें देख रहा है? चीख़ों की आवाज उसके लिए नई नहीं। आग लगने पर चिल्लाने में कोई नयापन नहीं। उसने आग देखी है। आग में जलते बच्चे देखे हैं, औरतें और मर्द देखे हैं। रात-रात भर जल कर सुबह ख़ाक हो गए मुहल्लों में जले लोग देखे हैं! वह देख कर घबराता थोड़े ही है? घबराए क्यों? आज़ादी बिना खून के नहीं मिलती, क्रांति बिना खून के नहीं आती, और, और, इसी क्रांति से तो उसका नन्हा-सा मुल्क पैदा हुआ है ! ठीक है। रात-दिन सब एक हो गए। उसकी आँखें उनींदी हैं, लेकिन उसे तो लाहौर पहुँचना है। बिलकुल ठीक मौके पर। एक भी काफ़िर ज़िंदा न रहने पाए। इस हलकी-हलकी सर्द रात में भी 'काफ़िर' की बात सोच कर बलोच जवान की आँखें खून मारने लगीं। अचानक जैसे टूटा हुआ क्रम फिर जुड़ गया है। ट्रक फिर चल पड़ी है। तेज रफ्तार से।

सड़क के किनारे-किनारे मौत की गोदी में सिमटे हुए गाँव, लहलहाते खेतों के आस-पास लाशों के ढेर। कभी-कभी दूर से आती हुई 'अल्ला-हो-अकबर' और 'हर-हर महादेव' की आवाज़ें। 'हाय, हाय'...'पकड़ो-पकड़ो'...मारो-मारो'...। यूनस खाँ यह सब सुन रहा है। बिलकुल चुपचाप। इससे कोई सरोकार नहीं उसे। वह तो देख रहा है अपनी आँखों से एक नई मुग़लिया सल्तनत शानदार, पहले से कहीं ज्यादा बुलंद...।

चाँद नीचे उतरता जा रहा है। दूध-सी चाँदनी नीली पड़ गई है। शायद पृथ्वी का रक्त ऊपर विष बन कर फैल गया है।

'देखो, जरा ठहरो।' यूनस खाँ का हाथ ब्रेक पर है। यह यह क्या? एक नन्ही-सी, छोटी-सी छाया ! छाया? नहीं, रक्त से भीगी सलवार में मूर्च्छित पड़ी एक बच्ची!

बलोच नीचे उतरता है। ज़ख़्मी है शायद! मगर वह रुका क्यों? लाशों के लिए कब रुका है वह? पर यह एक घायल लड़की...। उससे क्या? उसने ढेरों के ढेर देखे हैं औरतों के...मगर नहीं, वह उसे जरूर उठा लेगा। अगर बच सकी तो...तो...। वह ऐसा क्यों कर रहा है यूनस खाँ खुद नहीं समझ पा रहा...। लेकिन अब इसे वह न छोड़ सकेगा...काफ़िर है तो क्या?

बड़े-बड़े मजबूत हाथों में बेहोश लड़की। यूनस खाँ उसे एक सीट पर लिटाता है। बच्ची की आँखें बंद हैं। सिर के काले घने बाल शायद गीले हैं। खून से और, और चेहरे पर...? पीले चेहरे पर...रक्त के छींटे।

यूनस खाँ की उँगलियाँ बच्ची के बालों में हैं और बालों का रक्त उसके हाथों में...शायद सहलाने के प्रयत्न में! पर नहीं, यूनस खाँ इतना भावुक कभी नहीं था। इतना रहम, इतनी दया उसके हाथों में कहाँ से उतर आई है? वह खुद नहीं जानता। मूर्च्छित बच्ची ही क्या जानती है कि जिन हाथों ने उसके भाई को मार कर उस पर प्रहार किया था उन्हीं के सहधर्मी हाथ उसे सहला रहे हैं!

यूनस खाँ के हाथों में बच्ची...और उसकी हिंसक आँखें नहीं, उसकी आर्द्र आँखें देखती हैं दूर कोयटे में एक सर्द, बिलकुल सर्द शाम में उसके हाथों में बारह साल की खूबसूरत बहिन नूरन का जिस्म, जिसे छोड़ कर उसकी बेवा अम्मी ने आँखें मूँद ली थीं।

सनसनाती हवा में कब्रिस्तान में उसकी फूल-सी बहिन मौत के दामन में हमेशा-हमेशा के लिए दुनिया से बेख़बर...और उस पुरानी याद में काँपता हुआ यूनस खाँ का दिल-दिमाग।

आज उसी तरह, बिलकुल उसी तरह उसके हाथों में...। मगर कहाँ है वह यूनस खाँ जो क़तलेआम को दीन और ईमान समझ कर चार दिन से खून की होली खेलता रहा है...कहाँ है? कहाँ है?

यूनस खाँ महसूस कर रहा है कि वह हिल रहा है, वह डोल रहा है। वह कब तक सोचता जाएगा। उसे चलना चाहिए, बच्ची के ज़ख़्म !...और फिर, एक बार फिर थपथपा कर, आदर से, भीगी-भीगी ममता से बच्ची को लिटा यूनस खाँ सैनिक की तेज़ी से ट्रक स्टार्ट करता है। अचानक सूझ जानेवाले कर्तव्य की पुकार में। उसे पहले चल देना चाहिए था। हो सकता है यह बच्ची बच जाए...उसके ज़ख़्मों की मरहम-पट्टी। तेज, तेज और तेज ! ट्रक भागी जा रही है। दिमाग सोच रहा है वह क्या है? इसी एक के लिए क्यों? हज़ारों मर चुके हैं। यह तो लेने का देना है। वतन की लड़ाई जो है! दिल की आवाज है चुप रहो...इन मासूम बच्चों की इन कुरबानियों का आज़ादी के खून से क्या ताल्लुक़? और नन्ही बच्ची बेहोश, बेख़बर...

लाहौर आनेवाला है। यह सड़क के साथ-साथ बिछी हुई रेल की पटरियाँ। शाहदरा और अब ट्रक लाहौर की सड़कों पर है। कहाँ ले जाएगा वह? मेयो हास्पिटल या सर गंगाराम?...गंगाराम क्यों? यूनस खाँ चौंकता है। वह क्या उसे लौटाने जा रहा है? नहीं, नहीं, उसे अपने पास रखेगा। ट्रक मेयो हास्पिटल के सामने जा रुकती है।

और कुछ क्षण बाद बलोच चिंता के स्वर में डाक्टर से कह रहा है, 'डाक्टर, जैसे भी हो, ठीक कर दो...इसे सही सलामत चाहता हूँ मैं !' और फिर उत्तेजित हो कर, 'डाक्टर, डाक्टर...' उसकी आवाज़ संयत नहीं रहती।

'हाँ, हाँ, पूरी कोशिश करेंगे इसे ठीक करने की।'

बच्ची हास्पिटल में पड़ी है। यूनस खाँ अपनी डयूटी पर है, मगर कुछ अनमना-सा हैरान फ़िकरमंद। पेट्रोल कर रहा है।

लाहौर की बड़ी-बड़ी सड़कों पर। कहीं-कहीं रात की लगी हुई आग से धुआँ निकल रहा है। कभी-कभी डरे हुए, सहमे हुए लोगों की टोलियाँ कुछ फौजियों के साथ नजर आती हैं। कहीं उसके अपने साथी शोहदों के टोलों को इशारा करके हँस रहे हैं। कहीं कूड़ा-करकट की तरह आदमियों की लाशें पड़ी हैं। कहीं उजाड़ पड़ी सड़कों पर नंगी औरतें, बीच-बीच में नारे-नारे, और ऊँचे! और यूनस खाँ, जिसके हाथ कल तक खूब चल रहे थे, आज शिथिल हैं। शाम को लौटते हुए जल्दी-जल्दी कदम भरता है। वह अस्पताल नहीं, जैसे घर जा रहा है।

एक अपरिचित बच्ची के लिए क्यों घबराहट है उसे? वह लड़की मुसलमान नहीं, हिंदू है, हिंदू है। दरवाजे से पलंग तक जाना उसे दूर, बहुत दूर जाना लग रहा है। लंबे लंबे डग।

लोहे के पलंग पर बच्ची लेटी है। सफेद पट्टियों से बँधा सिर। किसी भयानक दृश्य की कल्पना से आँखें अब भी बंद हैं। सुंदर-से भोले मुख पर डर की भयावनी छाया...।

यूनस खाँ कैसे बुलाए क्या कहे? 'नूरन' नाम ओठों पर आके रुकता है। हाथ आगे बढ़ते हैं। छोटे-से घायल सिर का स्पर्श, जिस कोमलता से उसकी उँगलियाँ छू रही हैं उतनी ही भारी आवाज उसके गले में रुक गई है।

अचानक बच्ची हिलती है। आहत-से स्वर में, जैसे बेहोशी में बड़बड़ाती है

'कैंप, कैंप...कैंप आ गया। भागो...भागो...भागो...'

'कुछ नहीं, कुछ नहीं देखो, आँखें खोलो...'

'आग, आग...वह गोली...मिलटरी...'

बच्ची उसे पास झुके देखती है और चीख मारती है...

'डाक्टर, डाक्टर...डाक्टर, इसे अच्छा कर दो।'

डाक्टर अनुभवी आँखों से देख कर कहता है, 'तुमसे डरती है। यह काफिर है, इसीलिए।'

काफिर...यूनस खाँ के कान झनझना रहे हैं, काफ़िर...काफ़िर...क्यों बचाया जाए इसे? काफिर?...कुछ नहीं...मैं इसे अपने पास रखूँगा!

इसी तरह बीत गईं वे खूनी रातें। यूनस खाँ विचलित-सा अपनी डयूटी पर और बच्ची हास्पिटल में।

एक दिन। बच्ची अच्छी होने को आई। यूनस खाँ आज उसे ले जाएगा। डयूटी से लौटने के बाद वह उस वार्ड में आ खड़ा हुआ।

बच्ची बड़ी-बड़ी आँखों से देखती है। उसकी आँखों में डर है, घृणा है और, और, आशंका है।
यूनस खाँ बच्ची का सिर सहलाता है, बच्ची काँप जाती है! उसे लगता है कि हाथ गला दबोच देंगे। बच्ची सहम कर पलकें मूँद लेती है! कुछ समझ नहीं पाती कहाँ है वह? और यह बलोच?...वह भयानक रात! और उसका भाई! एक झटके के साथ उसे याद आता है कि भाई की गर्दन गँड़ासे से दूर जा पड़ी थी!
यूनस खाँ देखता है और धीमे से कहता है, 'अच्छी हो न ! अब घर चलेंगे!'
बच्ची काँप कर सिर हिलाती है, 'नहीं-नहीं, घर...घर कहाँ है! मुझे तुम मार डालोगे।'
यूनस खाँ देखना चाहता था नूरन, लेकिन यह नूरन नहीं, कोई अनजान है जो उसे देखते ही भय से सिकुड़ जाती है।
बच्ची सहमी-सी रुक-रुक कर कहती है, 'घर नहीं, मुझे कैंप में भेज दो। यहाँ मुझे मार देंगे...मुझे मार देंगे...'
यूनस खाँ की पलकें झुक जाती हैं। उनके नीचे सैनिक की क्रूरता नहीं, बल नहीं, अधिकार नहीं। उनके नीचे है एक असहय भाव, एक विवशता...बेबसी।
बलोच करुणा से बच्ची को देखता है। कौन बचा होगा इसका? वह इसे पास रखेगा। बलोच किसी अनजान स्नेह में भीगा जा रहा है...
बच्ची को एक बार मुस्कराते हुए थपथपाता है, 'चलो चलो, कोई फिक्र नहीं, हम तुम्हारा अपना है...'
ट्रक में यूनस खाँ के साथ बैठ कर बच्ची सोचती है, बलोच कहीं अकेले में जा कर उसे जरूर मार देनेवाला है...गोली से, छुरे से ! बच्ची बलोच का हाथ पकड़ लेती है, 'खान, मुझे मत मारना...मारना मत...' उसका सफेद पड़ा चेहरा बता रहा है कि वह डर रही है।
खान बच्ची के सिर पर हाथ रखे कहता है, 'नहीं-नहीं, कोई डर नहीं...कोई डर नहीं...तुम हमारा सगा के माफिक है...।'
एकाएक लड़की पहले खान का मुँह नोचने लगती है फिर रो-रो कर कहती है, 'मुझे कैंप में छोड़ दो, छोड़ दो मुझे।'
खान ने हमदर्दी से समझाया, 'सब्र करो, रोओ नहीं...तुम हमारा बच्चा बनके रहेगा। हमारे पास।'
'नहीं...' लड़की खान की छाती पर मुट्ठियाँ मारने लगी, 'तुम मुसलमान हो...तुम...।'
एकाएक लड़की नफ़रत से चीखने लगी, 'मेरी माँ कहाँ है! मेरे भाई कहाँ हैं! मेरी बहिन कहाँ...'

धनुयात्रा

धनुयात्रा ओड़ीशा में आजादी के बाद आई ऐसी मान्यता है। हमारे देश को आजादी 1947 में मिलि थी और 1948 में धनुयात्रा शुरु हुई। 11 जनवरी से 21 जनवरी तक यह यात्रा चलती है। 11 दिन तक चलने के कारण लोग इसका भरपूर मजा लेते हैं। बरगढ़ के इस धनुयात्रा को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में सबसे बडे खुले रंग मंच की मान्यता दी गयी है।

भगवान श्रीकृष्ण के मामा कंस मथुरा नरेश था। वो प्रजा के ऊपर बेहद अत्याचार करता रहता था। आजादी के पूर्व भी ब्रिटिश सरकार लोगों के ऊपर कंस के समान अत्याचार करती थी। भगवान श्रीकृष्ण लोगों के हिताकांक्षी थे। वे सर्वदा लोगों की मंगल कामना करते थे। भगवान को मारने केलिए कंस ने बहुत प्रयास किया पर मार न पाया, तो उसने कृष्ण को मारने केलिए एक यात्रा का आयोजन किया और उसमें श्रीकृष्ण को आमंत्रित किया। इसकी स्मृति में आज तक धनुयात्रा आयोजित होती आ रही है।

महाभारत युग में जो कंस हुआ करता था वह बहुत अत्याचारी था। लोगों का अमंगल चाहने वाला था। पर बरगढ़ के धनुयात्रा में होने वाला कंस लोगों की मंगल कामना करने वाला है।

धनुयात्रा में एक दरबार का आयोजन भी किया जाता है। जिस में कंस महाराज बने बैठते हैं और लोग अपनी समस्यायें महाराज के सामने सुनाते है। वो बिजली की समस्या हो या पानी और सड़कों की समस्या। कंस महाराज इसका समाधान करने का प्रयास करते हैं। इसके दौरान अगर किसी की गलती सामने आती है तो उसे दंड भी देते है। लोग कंस महाराज को धनुयात्रा का हीरो कहते है।

धनुयात्रा के दौरान लोग भले ही कंस को हीरो मानते है पर उसका वध भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा ही होता है। महाभारत में जैसे कंस की मृत्यु होती है वैसे ही कंस के वध का मंचन धनुयात्रा में किया जाता है। और इस तरह दौरान धनुयात्रा समाप्त होती है।

- मोनालिसा मोहंती, +3 प्रथम वर्ष

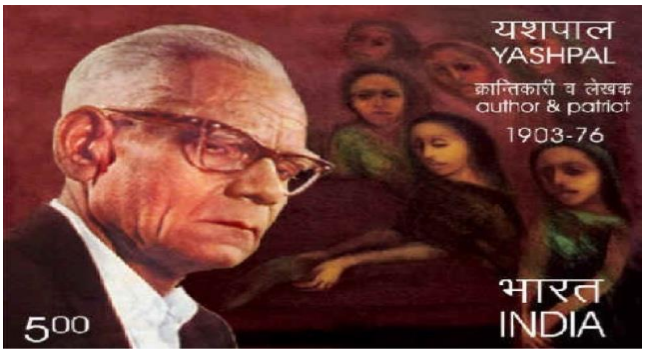

यशपाल

यशपाल (३ दिसम्बर १९०३ - २६ दिसम्बर १९७६) का नाम आधुनिक हिन्दी साहित्य के कथाकारों में प्रमुख है। ये एक साथ ही क्रांतिकारी एवं लेखक दोनों रूपों में जाने जाते है। प्रेमचंद के बाद हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्रगतिशील कथाकारों में इनका नाम लिया जाता है। अपने विद्यार्थी जीवन से ही यशपाल क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़े, इसके परिणामस्वरुप लम्बी फरारी और जेल में व्यतीत करना पड़ा। इसके बाद इन्होने साहित्य को अपना जीवन बनाया, जो काम कभी इन्होने बंदूक के माध्यम से किया था, अब वही काम इन्होने बुलेटिन के माध्यम से जनजागरण का काम शुरु किया। यशपाल को साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन १९७० में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

अंग्रेजी राज और यशपाल जी

अपने बचपन में यशपाल ने अंग्रेज़ों के आतंक और विचित्र व्यवहार की अनेक कहानियाँ सुनी थीं। बरसात या धूप से बचने के लिए कोई हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ों के सामने छाता लगाए नहीं गुज़र सकता था। बड़े शहरों और पहाड़ों पर मुख्य सड़कें उन्हीं के लिए थीं, हिन्दुस्तानी इन सड़कों के नीचे बनी कच्ची सड़क पर चलते थे। यशपाल ने अपने होश में इन बातों को सिर्फ़ सुना, देखा नहीं, क्योंकि तब तक अंग्रेज़ों की प्रभुता को अस्वीकार करनेवाले क्रांतिकारी आंदोलन की चिंगारियाँ जगह-जगह फूटने लगी थीं। लेकिन फिर भी अपने बचपन में यशपाल ने जो भी कुछ देखा, वह अंग्रेज़ों के प्रति घृणा भर देने को काफ़ी था। वे लिखते हैं, ''मैंने अंग्रेज़ों को सड़क पर सर्व साधारण जनता से सलामी लेते देखा है। हिन्दुस्तानियों को उनके सामने गिड़गिड़ाते देखा है, इससे अपना अपमान अनुमान किया है और उसके प्रति विरोध अनुभव किया।..'

अंग्रेज़ों और प्रकारांतर से **ब्रिटिश साम्राज्यवाद** के विरुद्ध अपनी घृणा के संदर्भ में यशपाल अपने बचपन की दो घटनाओं का उल्लेख विशेष रूप से करते हैं। इनमें से पहली घटना उनके चार-पाँच वर्ष की आयु की है। तब उनके एक संबंधी युक्तप्रांत के किसी क़स्बे में कपास ओटने के कारख़ाने में मैनेजर थे। कारख़ाना स्टेशन के पास ही काम करने वाले अंग्रेज़ों के दो-चार बँगले थे। आस-पास ही इन लोगों का खूब आतंक था। इनमें से एक बँगले में मुर्ग़ियाँ पली थीं, जो

आस-पास की सड़क पर घूमती-फिरती थीं। एक शाम यशपाल उन मुर्ग़ियों से छेड़खानी करने लगे। बँगले में रहनेवाली मेम साहिबा ने इस हरक़त पर बच्चों के फटकार दिया। शायद 'गधा' या 'उल्लू' जैसी कोई गाली भी दी। चार-पाँच वर्ष के बालक यशपाल ने भी उसकी गाली का प्रत्युत्तर गाली से ही दिया। जब उस स्त्री ने उन्हें मारने की धमकी दी, तो उन्होंने भी उसे वैसे ही धमकाते हुए जवाब दिया और फिर भागकर कारख़ाने में छिप गए। लेकिन घटना यूँ ही टाल दी जानेवाली नहीं थी। इसकी शिकायत उनके संबंधी से की गई। उन्होंने यशपाल की माँ से शिकायत की और अनेक आशंकाओं और आतंक के बीच यह भी बताया कि इससे पूरे कारख़ाने के लोगों पर कैसा संकट आ सकता है। फिर इसके परिणाम का उल्लेख करते हुए यशपाल लिखते हैं, 'मेरी माँ ने एक छड़ी लेकर मुझे ख़ूब पीटा मैं ज़मीन पर लोट-पोट गया परंतु पिटाई जारी रही। इस घटना के परिणाम से मेरे मन में अंग्रेज़ों के प्रति कैसी भावना उत्पन्न हुई होगी, यह भाँप लेना कठिन नहीं है।...'

दूसरी घटना कुछ इसके बाद की है। तब यशपाल की माँ युक्तप्रांत में ही नैनीताल ज़िले में तिराई के क़स्बे काशीपुर में आर्य कन्या पाठशाला में मुख्याध्यापिका थीं। शहर से काफ़ी दूर, कारखा़ने से ही संबंधी को बड़ा-सा आवास मिला था और यशपाल की माँ भी वहीं रहती थी। घर के पास ही 'द्रोण सागर' नामक एक तालाब था। घर की स्त्रियाँ प्रायः ही वहाँ दोपहर में घूमने चली जाती थीं। एक दिन वे स्त्रियाँ वहाँ नहा रही थीं कि उसके दूसरी ओर दो अंग्रेज़ शायद फ़ौजी गोरे, अचानक दिखाई दिए। स्त्रियाँ उन्हें देखकर भय से चीख़ने लगीं और आत्मरक्षा में एक-दूसरे से लिपटते हुए, भयभीत होकर उसी अवस्था में अपने कपड़ेउठाकर भागने लगीं। यशपाल भी उनके साथ भागे। घटित कुछ विशेष नहीं हुआ लेकिन अंग्रेज़ों से इस तरह डरकर भागने का दृश्य स्थायी रूप से उनकी बाल-स्मृति में टँक गया।..'अंग्रेज़ से वह भय ऐसा ही था जैसे बकरियों के झुंड को बाघ देख लेने से भय लगता होगा अर्थात् अंग्रेज़ कुछ भी कर सकता था। उससे डरकर रोने और चीख़ने के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं था।..'

आर्य समाज और कांग्रेस वे पड़ाव थे जिन्हें पार करके यशपाल अंततः क्रांतिकारी संगठन की ओर आए। उनकी माँ उन्हें स्वामी दयानंद के आदर्शों का एक तेजस्वी प्रचारक बनाना चाहती थीं। इसी उद्देश्य से उनकी आरंभिक शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। आर्य समाजी दमन के विरुद्ध उग्र प्रतिक्रिया के बीज उनके मन की धरती पर यहीं पड़े। यहीं उन्हें पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों को भी निकट से देखने-समझने का अवसर मिला। अपनी निर्धनता का कचोट-भरा अनुभव भी उन्हें यहीं हुआ। अपने बचपन में भी ग़रीब होने के अपराध के प्रति वे अपने को किसी प्रकार उत्तरदायी नहीं समझ पाते। इन्हीं संस्कारों के कारण वे ग़रीब के अपमान के प्रति कभी उदासीन नहीं हो सके।

कांग्रेस यशपाल का दूसरा पड़ाव थी। अपने दौर के अनेक दूसरे लोगों की तरह वे भी कांग्रेस के माध्यम से ही राजनीति में आए। राजनैतिक दृष्टि से फ़िरोज़पुर छावनी एक शांत जगह थी।

छावनी से तीन मील दूर शहर के लेक्चर और जलसे होते रहते थे। खद्दर का प्रचार भी होता था। 1921 में, असहयोग आंदोलन के समय यशपाल अठारह वर्ष के नवयुवक थे–देश-सेवा और राष्ट्रभक्ति के उत्साह से भरपूर, विदेशी कपड़ों की होली के साथ वे कांग्रेस के प्रचार-अभियान में भी भाग लेते थे। घर के ही लुग्गड़ से बने खद्दर के कुर्त्ता-पायजामा और गांधी टोपी पहनते थे। इसी खद्दर का एक कोट भी उन्होंने बनवाया था। बार-बार मैला हो जाने से ऊबकर उन्होंने उसे लाल रँगवा लिया था। इस काल में अपने भाषणों में, ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरोधी आँकड़ों के स्रोत के रूप में, वे देश-दर्शन नामक जिस पुस्तक का उल्लेख करते हैं वह संभवतः 1904 में प्रकाशित सखाराम गणेश देउस्कर की बांला पुस्तक देशेरकथा है, भारतीय जन-मानस पर जिसकी छाप व्यापक प्रतिक्रिया और लोकप्रियता के कारण ब्रिटिश सरकार ने जिस पर पाबंदी लगा दी थी।

महात्मा गाँधी और गाँधीवाद से यशपाल के तात्कालिक मोहभंग का कारण भले ही 12 फ़रवरी सन् 22 को, चौरा-चौरी काण्ड के बाद महात्मा गाँधी द्वारा आंदोलन के स्थगन की घोषणा रहा हो, लेकिन इसकी शुरुआत और पहले हो चुकी थी। यशपाल और उनके क्रांतिकारी साथियों का सशस्त्र क्रांति का जो एजेंडा था, गाँधी का अहिंसा का सिद्धांत उसके विरोध में जाता था। महात्मा गाँधी द्वारा धर्म और राजनीति का घाल-मेल उन्हें कहीं बुनियादी रूप से ग़लत लगता था। मैट्रिक के बाद लाहौर आने पर यशपाल नेशनल कॉलेज में भगतसिंह, सुखदेव और भगवतीचरण बोहरा के संपर्क में आए। नौजवान भारत सभा की गतिविधियों में उनकी व्यापक और सक्रिय हिस्सेदारी वस्तुतः गाँधी और गाँधीवाद से उनके मोहभंग की एक अनिवार्य परिणाम थी। नौजवान भारत सभा के मुख्य सूत्राधार भगवतीचरणऔर भगत सिंह थे। उसके लक्ष्यों पर टप्पणी करते हुए यशपाल लिखते हैं, 'नौजवान भारत सभा का कार्यक्रम गाँधीवादी कांग्रेस की समझौतावादी नीति की आलोचना करके जनता को उस राजनैतिक कार्यक्रम की प्रेरणा देना और जनता में क्रांतिकारियों और महात्मा गाँधी तथा गाँधीवादियों के बीच एक बुनियादी अंतर की ओर संकेत करना उपयोगी होगा। लाला लाजपतराय की हिन्दूवादी नीतियों से घोर विरोध के बावजूद उनपर हुए लाठी चार्ज के कारण, जिससे ही अंततः उनकी मृत्यु हुई, भगतसिंह और उनके साथियों ने सांडर्स की हत्या की। इस घटना को उन्होंने एक राष्ट्रीय अपमान के रूप में देखा जिसके प्रतिरोध के लिए आपसी मतभेदों को भुला देना जरूरी था। भगतसिंह द्वारा असेम्बली में बम-कांड इसी सोच की एक तार्किक परिणति थी, लेकिन भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु की फाँसी के विरोध में महात्मा गाँधी ने जनता की ओर से व्यापक दबाव के बावजूद, कोई औपचारिक अपील तक जारी नहीं की।

अपने क्रांतिकारी जीवन के जो संस्मरण यशपाल ने सिंहावलोकन में लिखे, उनमें अपनी दृष्टि से उन्होंने उस आंदोलन और अपने साथियों का मूल्यांकन किया। तार्किकता, वास्तविकता और विश्वसनीयता पर उन्होंने हमेशा ज़ोर दिया है। यह संभव है कि उस मूल्यांकन से बहुतों को

असहमति हो या यशपाल पर तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने का आरोप हो। आज भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो यशपाल को बहुत अच्छा क्रांतिकारी नहीं मानते। उनके क्रांतिकारी जीवन के प्रसंग में उनके चरित्रहनन की दुरभसंधियों को ही वे पूरी तरह सच मानकर चलते हैं और शायद इसीलिए यशपाल की ओर मेरी निरंतर और बार-बार वापसी को वे 'रेत की मूर्ति' गढ़ने-जैसा कुछ मानते हैं।

'क्रांति' को भी वे बम-पिस्तौलवाली राजनीति क्रांति तक ही सीमित करके देखते हैं। राजनीतिक क्रांति यशपाल के लिए सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन का ही एक हिस्सा थी। साम्राज्यवाद को वे एक शोषणकारी व्यवस्था के रूप में देखते थे, जो भगतसिंह के शब्दों में, 'मनुष्य के हाथों मनुष्य के और राष्ट्र के हाथों राष्ट्र के शोषण का चरम रूप है'(भगतसिंह और उनके साथियों के दस्तावेज (सं.) जगमोहन और चमनलाल, संस्करण '19, पृ.321) इस व्यवस्था के आधार स्तंभ-जागीरदारी और ज़मींदारी व्यवस्था भी उसी तरह उनके विरोध के मुख्य एजेंडे के अंतर्गत आते थे। देश में जिस रूप में स्वाधीनता आई और बहुतों की तरह, वे भी संतुष्ट नहीं थे। स्वाधीनता से अधिक वे इसे सत्ता का हस्तांतरण मानते थे। और यह लगभग वैसा ही था जिसे कभी प्रेमचंद ने जॉन की जगह गोविंद को गद्दी पर बैठ जाने के रूप में अपनी आशंका व्यक्त की थी।

क्रांतिकारी रष्ट्र भक्ति और बलिदान की भावना से प्रेरित-संचालित युवक थे। अवसर आने पर उन्होंने हमेशा बलिदान से इसे प्रमाणित भी किया। लेकिन यशपाल अपने साथियों को ईर्ष्या-द्वेष, स्पर्धा-आकांक्षावाले साधारण मनुष्यों के रूप में देखे जाने पर बल देते हैं। अपने संस्मरणों में आज राजेन्द्र यादव जिसे आदर्श घोषित करते हैं–'वे देवता नहीं हैं'–उसकी शुरुआत हिन्दी में वस्तुतः यशपाल के इन्हीं संस्मरणों से होती है। ये क्रांतिकारी सामान्य मनुष्यों से कुछ अलग, विशिष्ठ और अपने लक्ष्यों के लिए एकांतिक रूप से समर्पित होने पर भी सामान्य मानवीय अनुभूतियों से अछूते नहीं थे। हो भी सकते थे। शरतचंद्र ने पथेरदावी में क्रांतिकारियों का जो आदर्श रूप प्रस्तुत किया, यशपाल उसे आवास्तविक मानते थे, जिससे राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा मिलती हो, उसे क्रांतिकारी आंदोलन और उस जीवन को वास्तविकता का एक प्रतिनिधि और प्रामाणिक चित्र नहीं माना जा सकता। सुबोधचंद्र सेन गुप्त पथेरदावी में बिजली पानीवाली झंझावाती रात में सव्यसाची के निषक्रमण को भावी महानायक सुभाषचंद्र बोस के पलायन के एक रूपक के तौर पर देखते हैं, जबकि यशपाल सव्यसाची के अतिमानवीय से लगने वाले कार्य-कलापों और खोह-खंडहरों में बिताए जानेवाले जीवन को वास्तविक और प्रामाणिक नहीं मानते। क्रांतिकारी जीवन के अपने लंबे अनुभवों को ही वे अपनी इस आलोचना के मुख्य आधार के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

2, मार्च सन् 38 को जेल से रिहाई के बाद, जब उसी वर्ष नवंबर में यशपाल ने विप्लव का प्रकाशन-संपादन शुरू किया तो अपने इस काम को उन्होंने 'बुलेट बुलेटिन' के रूप में परिभाषित किया। जिस अहिंसक और समतामूलक समाज का निर्माण वे राजनीतिक क्रांतिकारी के माध्यम से करना चाहते थे, उसी अधूरे काम को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने लेखन को अपना आधार बनाया। अपने समय की सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं के केन्द्र में रखकर लिखे गए साहित्य को प्रायः हमेशा ही विचारवादी कहकर लांछित किया जाता है। नंद दुलारे वाजपेयी का प्रेमचंद के विरुद्ध बड़ा आरोप यही था। अपने ऊपर लगाए गए प्रचार के आरोप का यशपाल ने उत्तर भी लगभग प्रेमचंद की ही तरह दिया।

अपने पहले उपन्यास दादा कॉमरेड की भूमिका में उन्होंने लिखा, 'कला के प्रेमियों को एक शिकायत मेरे प्रति है कि (मैं) कला को गौण और प्रचार को प्रमुख स्थान देता हूँ। मेरे प्रति दिए गए इस फ़ैसले के विरुद्ध मुझे अपील नहीं करनी। संतोष है अपना अभिप्राय स्पष्ट कर पाता हूं...(दादा कॉमरेड, संस्करण' 59, पृ.4) अपने लेखकीय सरोकारों पर और विस्तार से टिप्पणी करते हुए बाद में उन्होंने लिखा, 'मनुष्य के पूर्ण विकास और मुक्ति के लिए संघर्ष करना ही लेखक की सार्थकता है। जब लेखक अपनी कला के माध्यम से मनुष्य की मुक्ति के लिए पुरानी व्यवस्था और विचारों में अंतर्विरोध दिखाता है और नए आदर्श सामने रखता है तो उस पर आदर्शहीन और भौतिकवादी होने का लांछन लगाया जाता है। आज के लेखक की जड़ें वास्तविकता में हैं, इसलिए वह भौतिकवादी तो है ही परंतु वह आदर्शहीन भी नहीं है। उसके आदर्श अधिक यथार्थ हैं। आज का लेखक जब अपनी कला द्वारा नए आदर्शों का समर्थन करता है तो उस पर प्रचारक होने का लांछन लगाया जाता है। लेखक सदा ही अपनी कला से किसी विचार या आदर्श के प्रति सहानुभूति या विरोध पैदा करता है। साहित्य विचारपूर्ण होगा।

साहित्य और यशपाल जी

यशपाल के लेखन की प्रमुख विधा उपन्यास है, लेकिन अपने लेखन की शुरूआत उन्होने कहानियों से ही की। उनकी कहानियाँ अपने समय की राजनीति से उस रूप में आक्रांत नहीं हैं, जैसे उनके उपन्यास। नई कहानी के दौर में स्त्री के देह और मन के कृत्रिम विभाजन के विरुद्ध एक संपूर्ण स्त्री की जिस छवि पर जोर दिया गया, उसकी वास्तविक शुरूआत यशपाल से ही होती है। आज की कहानी के सोच की जो दिशा है, उसमें यशपाल की कितनी ही कहानियाँ बतौर खाद इस्तेमाल हुई है। वर्तमान और आगत कथा-परिदृश्य की संभावनाओं की दृष्टि से उनकी सार्थकता असंदिग्ध है। उनके कहानी-संग्रहों में पिंजरे की उड़ान, ज्ञानदान, भस्मावृत्त चिनगारी, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ और उत्तमी की माँ प्रमुख हैं।

जो और जैसी दुनिया बनाने के लिए यशपाल सक्रिय राजनीति से साहित्य की ओर आए थे, उसका नक्शा उनके आगे शुरू से बहुत कुछ स्पष्ट था। उन्होंने किसी युटोपिया की जगह व्यवस्था की वास्तविक उपलब्धियों को ही अपना आधार बनाया था। यशपाल की वैचारिक यात्रा में यह सूत्र शुरू से अंत तक सक्रिय दिखाई देता है कि जनता का व्यापक सहयोग और सक्रिय भागीदारी ही किसी राष्ट्र के निर्माण और विकास के मुख्य कारक हैं। यशपाल हर जगह जनता के व्यापक हितों के समर्थक और संरक्षक लेखक हैं। अपनी पत्रकारिता और लेखन-कर्म को जब यशपाल 'बुलेट की जगह बुलेटिन' के रूप में परिभाषित करते हैं तो एक तरह से वे अपने रचनात्मक सरोकारों पर ही टिप्पणी कर रहे होते हैं। ऐसे दुर्धर्ष लेखक के प्रतिनिधि रचनाकर्म का यह संचयन उसे संपूर्णता में जानने-समझने के लिए प्रेरित करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। वर्षों 'विप्लव' पत्र का संपादन-संचालन। समाज के शोषित, उत्पीड़ित तथा सामाजिक बदलाव के लिए संघर्षरत व्यक्तियों के प्रति रचनाओं में गहरी आत्मीयता। धार्मिक ढोंग और समाज की झूठी नैतिकताओं पर करारी चोट। अनेक रचनाओं के देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद। 'मेरी तेरी उसकी बात' नामक उपन्यास पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ

दिव्या, देशद्रोही, झूठा सच, दादा कामरेड, **अमिता**, मनुष्य के रूप, मेरी तेरी उसकी बात (उपन्यास), पिंजड़े की उड़ाना, फूलों का कुर्ता, भस्मावृत चिंगारी, धर्मयुद्ध, सच बोलने की भूल (कहानी-संग्रह) तथा चक्कर क्लब (व्यंग्य-संग्रह)।

उपन्यास

- दिव्या
- देशद्रोही
- झूठा सच
- दादा कामरेड
- अमिता
- मनुष्य के रूप
- तेरी मेरी उसकी बात

कहानी संग्रह

- पिंजरे की उड़ान
- फूलों का कुर्ता
- धर्मयुद्ध
- सच बोलने की भूल
- भस्मावृत चिंगारी
- उत्तनी की मां
- चित्र का शीर्षक
- तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूं
- ज्ञान दान
- वो दुनिया

व्यंग्य संग्रह

- चक्कर क्लब
- कुत्ते की पूंछ

उत्कृष्ट काव्य

यहाँ एक सवाल पैदा होता है। शैली का उत्कर्ष गीत में भी मिलता है और महाकाव्य में भी। दो कविताएं अभिव्यंजना स्तर पर समान हो सकती हैं तो क्या सारा उत्कृष्ट काव्य समान रुप से श्रेष्ठ है? क्रोचे का उत्तर है कि अभिव्यंजना में उत्कर्ष की दृष्टि से कोई अंतर नहीं होता। मगर पेटर 'अच्छी कला' और 'महान कला' में अंतर करता है और अंतर का आधार कथ्य की गरिमा एवं महिमा है। 'एप्रिशिएशंस' में उसने 'शब्द और भाव की पूर्ण अनुरूपता प्राप्त' करने वाली अच्छी कला का मूल्यांकन करते हुए लिखा है :

"यह कला अच्छी कला होगी, पर यह आवश्यक नहीं कि वह महान कला भी हो, महान कला और अच्छी कला में अंतर संप्रति रूपविधान पर नहीं, वस्तु पर निर्भर करता है - कम से कम साहित्य के क्षेत्र में तो यह सभी स्थितियों में सत्य है। कला की महानता इस पर निर्भर करती है कि वह जिस वस्तु को अनुप्राणित अथवा नियमित करती है वह किस कोटि की वस्तु है। उसकी विविधता, महत उद्देश्य से उसकी संधि, उसमें विद्रोह की गहराई अथवा आशा का संदेश, ये सब उसकी महानता को निर्धारित करते हैं।

'जिन अवस्थाओं में मैंने अच्छी कला की स्थिति मानी है, उनमें यदि कला अवस्थित हो और फिर यदि उसे मानवता की कल्याण साधना में, पीड़ित दमित के परित्राण में अथवा हमारी सहानुभूति विस्तार में लगा दिया जाये, तो वह कला महान होगी। अथवा यदि कला हमारे विषय तथा हमारे और विश्व के सम्बन्ध के विषय में ऐसे नये या पुराने सत्य का उदघाटन जिससे हमारे ऐहिक जीवन को शक्ति और उन्नयन मिले अथवा दान्ते की तरह ईश्वर की महिमा को प्रकाशित करे, तो वह कला महान होगी। कला के जिन गुणों को मैंने सार रूप में मानस और आत्म द्वारा व्यक्त किया है। उस न्यायोचित संघटन एवं रंग और रहस्यमय गंध के परे यदि कला में मानव जाति की आत्मा का कुछ भी अंश है, तो मानव जीवन के विशाल प्रासाद में उसका तर्कसंगत और वास्तुविहित स्थान होगा।"

उपर्युक्त पंक्तियों में विषय की गरिमा के प्रति निष्ठ एक और तो लोंजाइनस तथा नीतीवादियों का स्मरण कराती है तथा दूसरी ओर पेटर की परवर्ती आलोचना में आर्नलड़ की विचारधारा का पूर्वाभास-सा देती है। मगर यह स्पष्ट है कि पेटर का प्रधान बल शैली संघटना आदि पर है तथा इस प्रकार वह कलावादी आंदोलन के निकट पड़ता है।

- लिज़ा मिश्रा, +3 तृतीय वर्ष

बालीयात्रा

बालीयात्रा जैसा नाम से ही स्पष्ट होता है बाली की यात्रा। बलीयात्रा का पर्व कार्तिक माह की पूर्णिमा को मुख्यतः ओडिशा में ही मनाया जाता है। कार्तिक माह 12 महीनों में सबसे पवित्र माना जाने वाला माह कहा गया है। पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार कार्तिक माह अक्टूबर - नवम्बर के महिने में आता है। पारम्परिक तौर पर बालीयात्रा इस बात का प्रतीक है कि कार्तिक माह के दौरान सभी धर्मों में मनाये जाने वाले उत्सव ओर त्योहार की पराकाष्ठा है।

बालीयात्रा (ओडिशा : बोईत बन्दना) ओडिशा में मनाया जाने वाला एक प्रमुख उत्सव कटक नगर में महानदी के किनारे गड़गड़िया घाट पर एक सप्ताह तक मनाया जाता है। यह उत्सव उस दिन की स्मृति में मनाया जाता है। जब प्राचीन काल में ओडिशा के नाविक बाली, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो और श्री लंका आदि सुंदर प्रदेशों की यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। 'बालीयात्रा' का शाब्दिक अर्थ है 'बाली की यात्रा'। इन यात्राओं का उद्देश्य व्यापार तथा सांस्कृतिक प्रसार होता था। जिन नावों से वे यात्रा करते थे वे आकर में विशाल होती थी और उन्हें 'बोईत' कहते थे। यह यात्रा कार्तिक पूर्णिमा से शुरू होती है। बालियात्रा उत्कल के नववाणिज्य का स्वर्णिम स्मारक है।

ओडिशा के कटक शहर में मनाए जाने वाले इस पर्व में कार्तिकेश्वर की प्रतिमा/तस्वीर की आराधना की जाती है, साथ ही कटक शहर में महानदी के किनारे स्तिथ शिवमंदिर में पूजा अर्चना भी होती है। कार्तिक माह के अंतिम दिनों में शहर में बने पुराने किले के पास महानदी के तट पर श्रद्धालु डुबकी लगाकर किनारे लगाने वाले मेले का आनंद उठाते हैं।

पुरानी मान्यतायें और श्रद्धांजलि के रूप में लोग, यहाँ रहने वाले प्राचीन नाविकों की स्मृति में कागज़, वृक्ष की छाल, रंगीन पेपर और केले के पत्तों की सहायता से नकली नाव बनाकर नदी या पोखरों में चलाते है। यहाँ ऐसा ही एक अन्य प्रचलित रिवाज भी है, जिसमें नाव के खोखले हिस्से पर लेप जलाई जाती है जिसे "बोईत बंदन" कहा जाता है। इन लोगों को पानी मे तैरती रोशनी का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कहाँ जाता है कि प्राचीन समय में कटक क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यापारी जिन्हें बाली, सुमात्रा, जावा, बर्नियो, श्रीलंका जैसे देशों में जाने के लिए लंबी यात्रा करनी पड़ती थी, उनके अनुसार यात्रा हेतु कार्तिक पूर्णिमा सबसे शुभ मानी जाती थी।

आकर्षण

ओडिशा में मनाये जाने वाला बलियात्रा उत्सव पिछले कुछ समय से यहाँ आने वाले सैलानियों के आकर्षण का केंद्र बन चुका है। सैलानियों की अभिरुचि देखते हुए अब ओडिशा सरकार भी इस पर्व के माध्यम से ओडिशा राज्य की संस्कृति और परंपरा को पूरे विश्व तक पहुंचाने के प्रयास में लगी है। इसके लिए ओडिशा सरकार का पर्यटन विभाग बालीयात्रा के दौरान कई तरह के आकर्षण पैकेज लाता रहता है ताकि लोगों को ओडिशा की आकर्षण संस्कृति की जानकारी मिल सकें।

बालीयात्रा के दौरान ओडिशा प्रशासन द्वारा मेले लगाकर राज्य में निर्मित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की प्रदर्शन भी लगाई जाती है, जिससे उन सामानों का क्रय-विक्रय भी होता रहे। मेले के दौरान लोगों के आकर्षण का केंद्र बन चुकी बोटिंग को भी प्रशासन बढ़ावा देती है जिससे और अधिक सैलानी बालीयात्रा में शामिल हो सकें।

कटक, भुबनेश्वर : ओडिशा की एतिहासिक बलियात्रा को अविस्मरणीय पल बनाने के लिए जिला प्रशासन हर संभव तैयारी में जुटा है। कार्तिक पूर्णिमा से शुरु होने वाला यह ऐतिहासिक पर्व अबकी प्रदूषण मुक्त रखने का संकल्प लिया गया है। महानदी तट पर मेरी टाइम म्यूजियम दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र होता है, जहाँ जाकर लोग बाली यात्रा की यादें ताजा करते हैं।

तत्कालीन पुरी जिलाधिकारी अरविंद अग्रवाल ने कहा कि अबकी बालियात्रा मेला स्थल पर धूल के गुबार नही दिखेंगे। इसके लिए कुछ रसायन का छिड़काव किया जाएगा, जो धूल को उड़ने नहीं देगा। जिला प्रशासन ने बनाया कि 44 एकड़ विशाल मैदान में लगाने वाला यह बालीयात्रा मेला स्थल कटक में 13 सौ स्टाल आबंटित किए गए हैं।

चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था

इनके अलावा 350 कियॉस्क आबंटित किए जा चुके हैं। विभिन्न प्रांतों से स्टाल लगाने वाले अपने-अपने स्टाल को फाइनल टच दे रहे हैं। तत्कालीन डीसीपी अखिलेश्वर सिंह ने बताया कि 32 प्लाटून पुलिस तैनात की गई है। इसके अलावा फायर सर्विस की व्यवस्था की गई है। फोर्स भीड़ नियंत्रण व सुरक्षा इंतजाम करेगी। चप्पे चप्पे पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं आखिर यह ओडिशा का प्रमुख उत्सव जो है।

- शाकंबरी दास, +3 प्रथम वर्ष

जानवर से जो डरा करती थी
अब वही इंसानों से डरने लगी है,
जो खुश रहा करती थी अब वही डर डर के जीने लगी है,
जो कभी बहारी दुनिया में रहना चाहती थी
अब वही बहार निकल ने से डरने लगी है,
जो कभी खुद को दुनिया में सबसे खूबसूरत माना करती थी
अब वही खुद को दुनिया में सबसे बदसूरत मानने लगी है,
जो कभी संसार में खुद को किस्मत माना करती थी
अब वही खुद को बद किस्मत मानने लगी हैं,

जो कभी सबसे बातें कर लिया करती थी
अब वही हीचकिचाने लगी है,
जो कभी खुशी के साथ बस/गाड़ी में जाया करती थी
अब वह पैदल जाना पसंद करने लगी है,
काश ऐसा हो पाता कि हर हाल में उसे घुट घुट कर ना जिना पड़े
वह भी खुले आसमान में पक्षी की भाँति उड़ सके
अपनी हर तमन्ना पूरी कर सके।

- शरीफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष

आपकी बात

मैंने पत्रिका पढ़ी, और मुझे ये लिखते हुये प्रसन्नता हो रही है कि, विद्यार्थियों में विषय की समझ, उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन, लेखन की कुशलता निखार पर है। आपको और विभाग के अध्यापकों को बधाई। एक लेखक या कवि के संदर्भ में विद्यार्थियों की अंतर्दृष्टि उन्हें भविष्य में सार्थक लेखन की ओर अग्रसर करेगी। एक बार पुनः बधाई और धन्यवाद।

प्रोफेसर एस. के. चतुर्वेदी
भू. पू. विभागाध्यक्ष
राजनीति शास्त्र विभाग
भू. पू. प्रो वाईस चांसलर
मेरठ विश्वविद्यालय

नवम्बर एवं दिसम्बर महीनों का अंक सबसे विशेष रहा है। मुखपृष्ठ देखते ही पाठक को पता लग जाएगा कि इसके अंदर कुछ विशेष लेख तो होगा ही, विषय- मन्नू भंडारी विशेषांक में नज़र पड़ते ही होंठो में हँसी और आँखों में चमक आ जाती है। और उस हँसी और चमक को साथ में लेकर ही इस विशेष अंक का प्रस्तुत किया गया है। लेख के बारे में बात करे तो मुझे अपनी लेख के अलावा और पांच-छः लेख जो अति सुंदर और सरल-सहज शब्दों में लिखा गया है वह जानने को मिला। मैं 'ई-भारती' की सदस्यों में गिनी जाती हूँ इससे परम सौभाग्य और कुछ नहीं है।

लिज़ा मिश्रा, +3 तृतीय वर्ष

मैगज़ीन हिंदी भारती का इंतजार हर महीने रहता है । बहुत खुशी होती है जब विभाग की छात्राएं एवं विभाग अध्यक्ष के प्रयास से ये मैगज़ीन हमारे सामने एक नया विषय, नई सोच लेकर प्रस्तुत होता है। परंतु और भी ज्यादा खुशी तब होगी जब विभाग के हर एक छात्रा इस मैगज़ीन में अपना सम्पूर्ण योगदान दे। और इस का प्रचार प्रसार करने में सहायता करें।

धन्यवाद

पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष

दिसंबर का जो अंक है वह हमारे बहुचर्चित लेखिका मन्नू भंडारी जी पर आधारित है। मन्नू भंडारी हिन्दी सहित्य की प्रसिद्ध लेखिका हैं। मैं और मेरी सहपाठियों ने इस अंक में उनके बारे में और उनके उपन्यास, कहानी सभी को दृष्टि में रख कर उनके बारे में ये लेख प्रस्तुत किए हैं। पहले तो उनके बारे में हम इतना नहीं जानते थे जितना अब जानने लगे हैं और हम लोग इसी तरह हमारी पत्रिका को आगे ले जाएँगे।

सोनलि राऊत, +3 तृतीय वर्ष

मैं हिंदी भारती नामक इस ई-पत्रिका से जुड़ी हुई हूँ, इस बात का मुझे बहुत गर्व है। इस ई-पत्रिका में मुझे सबसे अच्छे लेख पिंकी दीदी के लगते हैं। उनके लेख में एक जान सी होती है। जब भी मैं ई-पत्रिका पढ़ती हूँ मुझे कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। इसके लिए मैं हमारी अध्यापिका वेदुला मैडम को धन्यवाद देना चाहूंगी।

मोनालिसा मोहन्ती, +3 प्रथम वर्ष

सब अंकों में नवम्बर-दिसम्बर अंक सबसे महत्वपूर्ण रहा है, और इस अंक का मुख्य आकर्षण मन्नू भंडारी हैं। मन्नू भंडारी विशेशांक लेखिका के बहुआयामी व्यक्तित्व को बहुत ही सहज तरीके से प्रस्तुत करता है। ई-पत्रिका में पाठ से सम्बंधित ज्ञान के साथ साथ कंप्यूटर ज्ञान को भी बढ़ावा मिलता है। निःसंदेह कह सकते है कि हम सबके प्रयास और गुरुजनों के आशीर्वाद से ई-पत्रिका बहुत आगे तक जाएगी।

प्रियंका प्रियदर्शिनी परीड़ा, +3 तृतीय वर्ष

कृष्णा सोबती - उपन्यास लेखिका

https://youtu.be/bIE5O3C6edY

यादों के गलियारों से

महाविद्यालय में आयोजित व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण में विभाग की

महाविद्यालय के प्रतिष्ठाता स्व. धीरेन पट्नायक की पुण्यतिथि

इंटरव्यू की तैयारी

खबरों में

BHUBAN

Kalam's 16th edition creates magic with words

It was an evening of creative expressions that invited frequent claps and loud cheer. When Bollywood lyricist, script and screenwriter, **Manoj Muntashir**, made himself available for a session on his heart-touching lyrics from several Hindi film songs, the audience were in for a treat. The magic with words took place at the 16th edition of Kalam — an initiative by Prabha Khaitan Foundation and presented by Shree Cement Ltd in association with Ehsaas — Women of Bhubaneswar, which was organised at the Mayfair Hotels and Resorts on Friday evening.

Known for soulful songs like *Teri Galiyan, Tere Sang Yaara, Phir Bhi Tumko Chaahunga* and *Dekhte Dekhte*, Manoj shared his journey that had a humble beginning from a village in Uttar Pradesh. He further spoke about how he landed up in Mumbai, his motivations, Hindi films, poetry in films, his love for poetry and his life.

Fondly referred to as Kalam Ke Baahubali by young fans, Manoj spoke about his first book *Meri Fitrat Hai Mastani*. It is a collection of his poems. All through the evening the audience remained hooked to his recitations and the loudest cheer was heard when he read out the *shayari* he wrote after breaking up with his first love in Class XII.

The evening began with **Pradipta Mohapatra**, general manager of the hotel, reading the welcome note and moderator **Vedula Ramalakshmi** taking charge from there on. An interactive session with the audience was also arranged. **Nidhi Garg** thanked the author and the audience, while filmmaker **Amartya Bhattacharyya** felicitated Manoj. Guests at the event also received a signed copy of the book.

— Sandip.Bal@timesgroup.com

Manoj Muntashir

Amartya Bhattacharyya

Pradipta Mohapatra

Nidhi Garg

Vedula Ramalakshmi

धन्यवाद